

## गुरु के आर्थिक विचार आज के युग में प्रासंगिकता

जयरामदास

आज की स्थिति

गुरुओं ने जिस सामाजिक-आर्थिक वातावरण में अपने विचार व्यक्त किए थे उसमें कोई बड़ा परिवर्तन नहीं आया है। आज भी स्थिति लगभग वैसी ही है। यदि कोई परिवर्तन हुआ है तो वह इससे बुरा ही है। बिगड़ी हुई स्थिति के तीन कारण हैं: (क) शिक्षा के प्रसार के साथ भगवान, दैवी शक्ति या परलोक में नर्क का भय मुक्त हो गया है। इसने किसी भी प्रकार आर्थिक, नैतिक या अन्य कोई भी अपराध करने में लोगों के हौसले को बढ़ाया है। (ख) अपराध करने के लिए काम में लाए जाने वाले उपकरण और अधिक परिष्कृत हो गए हैं जिसमें कानून और व्यवस्था की स्थिति खराब हुई है, (ग) वैज्ञानिक प्रगति के कारण धर्म का प्रभाव कम हो गया है। इसके फलस्वरूप नैतिक स्तर में गिरावट आ गई है जिससे चरित्र का निरंतर पतन हो रहा है।

जब गुरु नानक ने त्यागी व्यक्ति का विकास करने का प्रचार किया था वैसे हमारे ग्रह में दुर्लभ था और आज जिन व्यक्तियों से हमारा समाज बना है वह गुरुमुख की अपेक्षा पशु ही हैं। वे वासना, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसी बुराइयों से भरे पड़े हैं। परिणामस्वरूप वे त्यागी होने की बजाय अपने में ही अधिक केंद्रित हैं। धन अपने पक्ष में करने की प्रजातांत्रिक प्रणाली ने व्यक्तियों के निहित स्वार्थों का पूरा समर्थन किया। व्यक्ति और सामान्य जनता के कल्याण के बीच संघर्ष आड़े आ गया है और समाज का विघटन न केवल धर्म, जाति और रंगभेद के कारण हो रहा है। बल्कि बढ़ती हुई आर्थिक विषमताओं के कारण भी हो रहा है। संपत्तिशाली लोगों और संपत्तिहीन लोगों के बीच संघर्ष ने जोर पकड़ लिया है। दोनों पक्षों के बीच एक बड़ा संघर्ष होने के स्पष्ट आधार तैयार हो गए हैं। राजाओं और नवाबों के बीच होने वाले झगड़ों का स्थान राजनीतिक अस्थिरता और राज्य के विघटन ने ले लिया है। आगजनी, लूट, डाके, कत्ल और बलात्कार आज आम होते जा रहे हैं। आर्थिक शक्ति जो अब औद्योगिक और व्यापारिक वर्ग के हाथ में है वह सरकार और प्रेस को अपनी स्थाई सिद्धि के लिए बांधे हुए है। प्रशासन तंत्र ऊपर से लेकर नीचे तक पूरा भ्रष्ट है और काहिल अधिकारी वर्ग अपने दही-बैंगन के पीछे भाग रहा है। प्रतीत होता है कि जैसा कि गुरु नानक ने भविष्यवाणी की थी कि स्थिति पूरी तरह से बिगड़ चुकी है। गुरु का कहना था कि उनके समय कलयुग शैशवावस्था अवस्था में था। अब यह बढ़कर बालकपन की अवस्था में आ गया है। गुरु नानक की शिक्षाएँ, जो आधुनिक अवधि के अग्रचेता थे, विद्यमान स्थिति में पहले के किसी भी काल की अपेक्षा अधिक संगत है।

उपभोग : आज के युग की उत्पादन प्रक्रिया में मशीन प्रधान भूमिका अदा कर रही है और इसने श्रम को लाभकारी बना दिया है। श्रमिक वर्ग के शोषण और कम मजदूरी की अदायगी के कारण श्रमिकों के उपभोग का स्तर घटकर अवमाननीय हो गया है। नियोक्ता या उद्यमकर्ता श्रमिक वर्ग को उससे कहीं कम अदायगी करते हैं जो वह नियोक्ता से अर्जित करता है। फलस्वरूप श्रमिक वर्ग की मजूरी किशोरी की

जाती है और उसे उद्यम करता की पूंजी में बदल दिया जाता है। इस प्रकार कमाये गए लाभ में श्रमिक को हिस्सा नहीं मिलता। परिणामस्वरूप अमीर और गरीब के उपभोग स्तर के बीच अंतर अकल्पनीय अंतर हो गया है। उत्पादक वर्ग केवल श्रमिकों को भुगतान नहीं करता बल्कि एक या दूसरे आधार पर करों से भी बच रहा है। इस प्रकार वह उस उच्च उपभोग-स्तर का भोग करता है जो 'घल्ल खाई' का परिणाम नहीं हो सकता।

गुरु नानक कभी नहीं चाहते कि कोई भी आदमी भूख से मरे। दूसरी ओर उन्होंने विलासिता पूर्ण जीवन और एवं अवमानवीय जीवन के बीच एक संतुलन स्थापित किया था। उचित उपभोग स्तर का वर्णन करने के लिए उन्होंने शब्द 'चखो' का प्रयोग किया। इसका अर्थ यह है कि हमारी वास्तविक आवश्यकताओं की पूर्ति उचित रूप में होनी चाहिए जिससे कि हम अपने स्वास्थ्य का उचित स्तर बनाए रख सकें और त्यागी व्यक्ति बन सके। ऐसे व्यक्ति से जो पहले ही भूख से पीड़ित हो किसी त्याग की आशा नहीं की जा सकती। जब नानक ने त्याग करने वाले व्यक्ति की बात कही थी। तब आशय कैसे न्यूनतम जीवन स्तर से अधिक का त्याग करने से था जिसका प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उपभोग करने की अपेक्षा की जाती थी

नानक जी ने आवश्यकताओं की बहुलता और उनमें बढ़ती करने के विरुद्ध चेतावनी दी थी क्योंकि यह दुःख का स्रोत है। असंतुष्ट' इच्छा से समाज में निराशा, असंतोष और संघर्ष होता है। इसके अतिरिक्त उपभोग के स्तर को सभी समय के लिए अनियंत्रित होने की अनुमति नहीं दी जा सकती। समाज के एक वर्ग के स्तर में वृद्धि का अर्थ अंतिम विश्लेषण करने पर समाज के एक अन्य वर्ग को जीवना आवश्यक वस्तुओं से वंचित करना होगा। उपभोग का अधिक ऊँचा स्तर समाज को अकर्मण्य, सुस्त, उत्पादक, फिजूलखर्च और दूसरों पर निर्भर बना देता है। ऐसे किस्म का समाज स्थिर, गतिशील और जीवन के प्रति ढीला बन जाता है। जीवन में कोई चुनौती नहीं रहती इसमें कोई रोमांच, उत्साह और संघर्ष नहीं रहता। इस प्रकार की स्थिति में पहुँचे हुए राष्ट्र का शोषण का शिकार होना आवश्यक है।

दूसरी ओर उच्च स्तर के उपभोग से प्राकृतिक साधनों का प्रयोग न्यूनतम समय में होगा जिसके फलस्वरूप अंततोगत्वा पावर या दूसरी सामग्री की कमी पैदा हो जाएगी।

विभिन्न देशों में वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों ने अपनी ही मानव जाति के सीमित प्राकृतिक साधनों के अति प्रयोग और दुरुपयोग के विरुद्ध चेतावनी दी है। उनका कहना है कि यदि हमने विद्यमान ज्ञात स्रोतों का उपयोग की मौजूद दर से करना जारी रखा तो पेट्रोल का भंडार विद्यमान सदी से अधिक नहीं चलेगा। कोयला भी अधिक से अधिक 50 वर्षों तक और चल सकेगा। अन्य वस्तुगत स्रोत भी असीमित नहीं हैं। यदि हमने अपने को अनुशासन्बद्ध न किया तो संभवतः दो सदी के पश्चात हमारे वंशजों को युनः मानवीय इतिहास का श्रीगणेश करना पड़ेगा। उन्होंने, विशेषकर गुरु रामदास तथा इनके बाद अन्य गुरुओं ने आर्थिक विकास पर जोर दिया और व्यापार तथा उद्योग को प्रोत्साहित किया। दूसरी ओर उन्होंने नैतिक सिद्धांतों पर आधारित व्यापार को बढ़ावा दिया तथा अपने अनुयायियों को इसे गरीबों के साथ

बांटने का उपदेश किया। इस प्रकार प्राप्त धनराशि सार्वजनिक प्रयोजनों पर खर्च की जाती थी, व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति पर नहीं। यदि हम नानक जी के उपदेशों पर चले तो उत्पादन अनेक गुना बढ़ जाएगा और कमी होने की संभावना नहीं होगी। कोई भी वर्ग परोपजीवी नहीं बनेगा। कोई भी दूसरों का शोषण नहीं करेगा, जिससे सद्भावपूर्ण समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा।

विनिमय के क्षेत्र में गुरु नानक ने व्यापारियों को हिदायत दी थी कि वे अपने व्यापार में ईमानदारी बरतें, माप-तौल ठीक से करें, जमाखोरी न करें और समाज को उचित दाम पर सामग्री मुहैया करें। उन्होंने साहूकारों और उधार देने वालों को उपदेश दिया कि वह अत्याचार न करें बल्कि गरीबों के प्रति दयालुता बरतें। गुरु की शिक्षाएँ आज भी इतनी प्रासंगिक हैं कि आधुनिक राज्य ने माप-तौल मिलावट जमाखोरी आदि के बारे में अनेक कानून बनाकर उपभोक्ता की रक्षा करने और व्यापारी पर अनुशासन बनाए रखने का उत्तरदायित्व स्वयं संभाल लिया। गुरुओं ने खासतौर से संपत्ति न रखने की सलाह दी। 'यह मेरा है और यह तेरा है' इसे भूल जाना चाहिए। उनके अनुसार संपत्ति उत्पादन के साधनों के स्वामियों द्वारा इनका प्रयोग सार्वजनिक क्षेत्र में किया जाना चाहिए। आज भी यदि व्यापारी गुरु के परामर्श का अनुसरण करें और व्यापक समाज के प्रति अपने दायित्वों की भावना महसूस करें तो राज्य के दमनकारी कानूनों की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी।

सिख गुरुओं ने धन संपत्ति के उपयुक्त उचित वितरण के बारे में अधिक कहा है। अमीरों और गरीबों के बीच असमानताएँ उस समय भी इतनी स्पष्ट थी और व्यापक थीं कि गुरु उस स्थिति पर खेद पूर्ण उद्गार प्रकट करते हुए बिना नहीं रह सके। जब नानक जी लाहौर में थे तब उन्होंने उसका वर्णन अत्याचारपूर्ण नगर के रूप में किया था और दिल्ली के समीप बेधर गरीबों के मुकाबले में अमीरों की अट्टालिकाओं पर खेद व्यक्त किया था। शोषण के उपकरणों के पूर्ण परिष्कृत हो जाने से असमानताएँ और अधिक व्यापक व्यापक हो गई है और राज्य गरीबों के प्रति अपनी जिम्मेदारी के विषय में अधिक सावधान हो गया है। इसलिए इस प्रकार की असमानताओं के समाधान के लिए नानक जी ने उस समय जो सुझाव दिए थे वह आज भी बहुत उपयोगी हैं। गुरुओं ने हमारे उपभोग स्तर के लिए एक शर्त लगा दी और यह शर्त थी प्राथमिकता के अनुसार वितरण। एक व्यक्ति द्वारा अच्छे स्तर के उपभोग का आनंद भी उठाया जा सकता जब उत्पादित माल को उत्पादन के कारकों में उपयुक्त रूप में वितरित किया गया हो। 'वंड के छको' वितरण को उपभोग से वरीयता दी गई है। इसी के साथ, नानक जी का अमीरों को उपदेश था कि वे यह न सोचें कि उनके पास जो धन संपत्ति है वह उनकी अपनी है बल्कि उन्हें यह सोचना चाहिए कि यह सब की है।

कराधान के क्षेत्र में गुरु नानक ने खेद प्रकट किया कि राज्य भी स्वयं अपनी प्रजा का शोषण करने वाली संस्था के रूप में कार्यरत है। किसानों, दस्तकारों और व्यापारियों को राज्य को भारी करों का भुगतान करना पड़ता था। जब कभी परिस्थितियाँ या प्राकृतिक घटनाएँ उत्पादन प्रक्रिया के प्रतिकूल होती थी तब भी करदाता के प्रति कोई नरमी नहीं बरती जाती थी। भारी करों के साथ-साथ लोगों को भ्रष्ट काजी तथा हुकमरानों को रिश्वत देनी पड़ती थी। आज भी स्थिति बेहतर नहीं है। तथाकथित आधुनिक प्रजातांत्रिक

राज्य, कल्याणकारी क्रियाकलाप के छद्मवेश में; मध्य युग के अपने समकक्षों की अपेक्षा अधिक शोषण करने वाला बन गया है। आधुनिक राज्य के कर लगाने वाले लोग, करदाता से उसके अल्प साधनों से अपना हिस्सा लिए बिना किसी को नहीं छोड़ता, यहाँ तक कि गरीब से गरीब को भी नहीं छोड़ते। अप्रत्यक्ष कर इतने आम और अनेक हो गए हैं कि प्रायः सभी वस्तुओं पर जिनका गरीब लोग उपभोग करते हैं, भारी कर लेते हैं। फलस्वरूप श्रमिक वर्ग की क्रय शक्ति समाप्त होती जा रही है और उसे जीवन-रक्षा के अमानवीय स्तर की ओर धकेला जा रहा है। निसंदेह अमीरों पर भी भारी कर लगे हैं किंतु वे धन और अपने संबंधों के प्रभाव से साफ बच जाते हैं। यदि वे अपनी देनदारी का भुगतान नहीं करते तो भी उनके विरुद्ध कोई दमनकारी कार्यवाही नहीं की जाती क्योंकि भ्रष्ट व्यापारियों, भ्रष्ट राजनीतिज्ञों और भ्रष्ट अधिकारियों को एक-दूसरे से सांठगांठ है। इस प्रकार की स्थिति का सामना करने के लिए नानक जी कहते हैं कि शासक को गरीबों के हितों की देखभाल करने के लिए सच्चा शासक होना चाहिए। उसे स्वयं सादा जीवन बिताना चाहिए और उन्हें गुरुमुख का चरित्र अपनाना चाहिए। तभी यह 'सच्चे बादशाह' कहलाने का अधिकार हकदार होगा और आम लोगों के सामान्य हित की देखरेख करने के योग्य होगा।

गुरु नानक जानते थे कि मालवीय स्वभाव को कठोर तरीकों से एकाएक नहीं बदला जा सकता है। यद्यपि उन्होंने सच्चे गुरुमुख का निर्माण करने का प्रयास किया ताकि समाज को स्वार्थी व्यक्तियों से मुक्त रखा जा सके तथापि सिख आंदोलन को समूचे समाज को बदलने के लिए बहुत कम समय मिला। यदि गुरुओं को जैसी कि उन्होंने कल्पना की थी, समाज को उसके अनुरूप वालने के लिए पर्याप्त समय मिलता तो उनके आदर्श राज्य समाज का स्वप्न चरितार्थ हो जाता जिसका वर्णन मार्शल के शब्दों में इस प्रकार किया जा सकता है

"और ऐसे विश्व में जहाँ सभी लोग पूर्णनः सच्चरित्र हों। प्रतियोगिता को कोई स्थान न हो होगा; किंतु यही स्थिति निजी संपत्ति और प्रत्येक प्रकार के निजी अधिकार की होगी। लोग केवल अपने कर्तव्यों के बारे में सोचेंगे और कोई भी आदमी अपने पड़ोसी की अपेक्षा जीवन की सुख-सुविधाओं और ऐशो आराम से अधिक अंश प्राप्त करने का इच्छुक नहीं होगा।"

मार्शल द्वारा कल्पित आदर्श स्थिति और नानक द्वारा नानक जी द्वारा वर्णित स्थिति में बहुत समानता है। वैकल्पिक रूप में, गुरु नानक ने कृषि के क्षेत्र में सामूहिक कार्य और वाणिज्य तथा उद्योग के क्षेत्र में धरोहर (ट्रस्टीशिप) के सिद्धांत का प्रचार किया। उन्होंने कई स्थानों में साहूकारों, व्यापारियों, उत्पादकों के बीच में प्रचार किया कि वे संपत्ति पर अहस्तांतरणीय अधिकार का दावा न करें। उनका कहना था कि उन्हें अपनी संपत्ति को परमात्मा (समाज) की देन समझना चाहिए और अपने को इसका अभिरक्षक/प्रबंधक मानना चाहिए। कृषि के क्षेत्र में जो उनके विचार में सर्वोत्तम व्यवसाय था, गुरु नानक ने सामूहिक काश्त और समान पाठशाला सहित सामुदायिक जीवन बिताने का सुझाव दिया। उनकी शिक्षाएँ अत्यंत आधुनिक थीं हालांकि उनके काल में कोई मार्क्स, सिस्मोंडी और कोई गांधी नहीं हुआ था। उन्होंने न केवल सामूहिक जीवन का प्रचार किया बल्कि जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए स्वयं भी सामूहिक जीवन बिताया।

उपर्युक्त कुछ प्रमुख विचारों के अतिरिक्त सूदखोरी, उत्पादन के कारकों, भूमि, श्रम, पूंजी, राज्य के कर्तव्यों के बारे में उनके विचार भी आधुनिक हैं और विद्यमान सामाजिक संदर्भ में प्रासंगिक हैं।

इन विचारों में ऐसी कोई भी बात नहीं है जो हमें इन्हें अमल में लाने से रुकती हो। तब भी एक ही संभावित बाधा हो सकती है कि हमारे जैसे बड़े देश में हमें स्वतंत्र व्यक्ति-स्वतंत्रता के कारण समाज के किसी वर्ग पर कोई प्रयोग थोप नहीं सकते।

(सिख गुरुओं का आर्थिक चिंतन-जयराम दास, से साभार)